JEMSH I – 1603-25

Page No.:
Date: / /

Que- जेम्स प्रथम और उसकी संसद के बीच हुए संघर्ष के कारणों का वर्णन करें।

Explain the Causes that led to the quarrel between James I and his Parliament.

Ans- ट्यूडर वंशीय शासक काफी शक्तिशाली थे। कानून बनाना या स्थगित करना उनके हाथ की बात थी। न्याय पर उनका एकाधिकार था। वाणिज्य-व्यापार में हस्तक्षेप करना, किसी व्यक्ति को कैद करना या दण्ड देना, संसद को बैठक बुलाना या न बुलाना राजा के इच्छा पर निर्भर था। सबसे बड़ी बात तो यह थी कि उन्हें इस प्रकार की निरंकुश शक्ति प्रजा की अनुमति से प्राप्त थी। आन्तरिक विद्रोह तथा विदेशी आक्रमण के खतरे इंग्लैण्ड की जनता के दिल में यह भय पैदा हो गया था, जिसके कारण राजाओं ने अधिक शक्ति प्राप्त करली थी।

ट्यूडर वंश की अन्तिम शासिका एलिजाबेथ के काल में रानी तथा संसद के बीच संघर्ष शुरू हो गया। महारानी गृहनीति तथा विदेश नीति के संचालन में संसद का हस्तक्षेप पसंद नहीं करती थी। संसद के विशेषाधिकार तथा एकाधिकार को लेकर रानी और संसद के बीच तनाव बढ़ने लगा।

लेकिन जेम्स प्रथम के काल में अनेक परिवर्तन हो गये। अब जनता राजा की निरंकुशता से नफरत करने लगी तथा उसके विशेषाधिकार पर पाबन्दी लगाना चाहती थी क्योंकि देश में आन्तरिक शांति कायम हो चुकी थी और विदेशी आक्रमण का भय भी टल चुका था। इंग्लैण्ड के सामने उत्तराधिकार

Scanned with CamScanner

Page No.:
Date:

को भी कोई समस्या नहीं थी। लन्दन के निवासी काफी धनी सम्पन्न हो चुके थे तथा देश में छोटे-छोटे कई तरह के उद्योग संचालित कर रहे थे लेकिन कृषक वर्ग तथा जमीनदारों की आर्थिक स्थिति नहीं सुधर पायी थी। सत्रहवीं सदी के प्रारम्भ में फसलों के मारे जाने तथा जनसंख्या में वृद्धि इसके प्रमुख कारण थे। राजा को भी बढ़ती कीमतों के कारण संसद से अधिक धन की मांग करनी पड़ी। संसद इसके लिए तैयार नहीं थी। ऐसी परिस्थिति में संसद ने फायदा उठाया और इंग्लैण्ड में संवैधानिक सुधार की मांग जोर पकड़ने लगी।

16वीं सदी के मध्य से उच्चवर्गीय लोग शिक्षा प्राप्त करने के तरफ विशेष ध्यान देने लगे। रोम तथा यूनान की सभ्यता ~~में काफी~~ से लोग काफी परिचित हो चुके थे। शिक्षा के प्रसार से लोगों में राष्ट्रीय चरित्र का विकास हो चुका था तथा लोगों में जागृति भी पैदा हो चुकी थी। ट्यूडर काल में वकील तथा व्यापारी वर्ग काफी ऊपर उठ चुके थे। अब जनता संसद के माध्यम से अपना अधिकार प्राप्त करने की कोशिश करने लगी। फलस्वरूप, संसद तथा राजा के बीच संघर्ष प्रारम्भ होना स्वाभाविक हो गया। इस संघर्ष के निम्न लिखित मुख्य कारण थे।

1. <u>जेम्स प्रथम का उत्तरदायित्व</u> — संसद तथा राजा के बीच संघर्ष बढ़ाने में जेम्स प्रथम कुछ हद तक उत्तरदायी था। वह विद्वान एवम् व्यावहारिक होते हुए भी राजा के दैवी अधिकारों का समर्थक था। जब वह स्कॉटलैण्ड में था तभी वह अपने विचार एक पुस्तक 'ट्रू लॉ ऑफ फ्री मोनार्कीज' में स्पष्ट कर चुका था।

उसका विश्वास था कि कानून का निर्माता राजा की इच्छाओं में होता है अर्थात राजा ही कानून का जन्मदाता है। 1609 ई॰ में संसद में भाषण देते हुए उसने कहा था कि यदि राजा ठीक ढंग से शासन नहीं भी करता है तो जनता को उसके विरुद्ध विद्रोह करने का कोई अधिकार नहीं है। परन्तु राजा के अधिकारों का स्पष्ट वर्णन लिखित रूप में नहीं था। इसके साथ ही इंग्लैण्ड की जनता जेम्स के इस दैवी अधिकार के सिद्धान्त का समर्थक नहीं रह गयी थी। राजा ने अपने इन विचारों को बहुत ज्यादा व्यक्त किया जिससे जनता आमजन के अधिकारों के प्रति और ज्यादा सजग हो गयी।

जेम्स स्कॉटलैण्ड से आया था उसको यहाँ की भाषा एवं इंग्लैंड की कानून व्यवस्था की पूरी जानकारी नहीं थी। वह प्रशासनिक कार्य में भी ज्यादा समय नहीं दे पाता था साथ ही अपने दरबार में स्कॉट लोगों को ऊँचे-ऊँचे पद पर बहाल कर रखा था, जिससे अंग्रेज नाराज थे। राजा के खर्चीले स्वभाव से राजकोष खाली हो चुका था हालांकि राज्य में सम्पन्नता बढ़ी थी फिर भी करों में कोई वृद्धि नहीं हुई थी अतः राज्य सरकार के बढ़ते हुए खर्च के कारण राज्य को धन की अति आवश्यकता थी। धन पर संसद के नियंत्रण ने उसे अधिक शक्तिशाली बना दिया। जेम्स यह देख नहीं सकता था कि वह संसद को शासन में महत्व प्रदान करने के लिए तैयार नहीं था। फलस्वरूप संसद और राजा के बीच संघर्ष छिड़ गया।

2. शर्ली का मुकदमा तथा विशेषाधिकार की प्राप्ति — जेम्स तथा संसद के बीच संसद सदस्यों के विशेषाधिकार के सवाल को लेकर जंग छिड़ गया। संसद सदस्य "सर टॉमस

शर्ली" को राजकीय कर नहीं चुकाने के कारण बन्दी बना लिया गया। संसद ने राजा पर दबाव डाला कि शर्ली को मुक्त किया जाए। अंततः विजय तो संसद के पक्ष में ही होनी थी। अब संसद को यह अधिकार प्राप्त हो गया कि उसके सदस्य को अधिवेशन के समय गिरफ्तार नहीं किया जा सकता और ऐसा करने वालों को दण्ड दिया जा सकता है।

3. **फोर्टेस्क्यू बनाम गॉडविन मुकदमा** — बकिंघम क्षेत्र से सर फ्रांसिस गॉडविन संसदीय चुनाव में प्रिवी काउन्सिल के सदस्य फोर्टेस्क्यू को पराजित कर दिया लेकिन राजा ने गॉडविन पर कानून के विरुद्ध कार्य करने का दोषारोपण कर उनके चुनाव को निरस्त कर दिया किन्तु संसद ने गॉडविन के चुनाव को सही बताते हुए उसे स्थान ग्रहण करने के लिए आदेश दिया। राजा को यह बात पसन्द नहीं आयी। अब राजा और संसद के बीच संसदीय चुनाव के अधिकार के प्रश्न को लेकर संघर्ष छिड़ गया। अन्ततः राजा को यह स्वीकार करना पड़ा कि संसद ही चुनाव के बारे में निर्णय ले सकती है। हालांकि इस अवसर पर गॉडविन फोर्टेस्क्यू के चुनाव संसद को रद्द करना पड़ा परन्तु वास्तव में विजय संसद को ही मिली। भविष्य में सभी चुनावों का निर्णय संसद को ही करना था। 1604 ई० में संसद द्वारा एक निवेदन पत्र (A form of Apology and Satisfaction) तैयार किया गया जिसमें स्पष्ट रूप से यह कहा गया था कि संसद के अधिकार राजा की इच्छा पर निर्भर नहीं करते बल्कि संसद को ऐसे अधिकार हैं, जिसमें राजा कोई रुकावट नहीं डाल सकता। परन्तु जेम्स ने इस निवेदन पत्र का कड़ा विरोध किया।

की सम्पत्ति सुरक्षित नहीं रहेगी। राजा संसद की स्वीकृति के बिना कर वसूल करता रहा और यह संघर्ष का कारण बना रहा।

6. राजा के घोषणा-पत्र सम्बन्धी अधिकार — जेम्स प्रथम अपने घोषणा करने के अधिकार का भी दुरुपयोग कर रहा था। जुलाई 1610 ई. में संसद ने राजा के इस अधिकार को चुनौती दी। संसद का तर्क था कि राजा अपनी घोषणाओं द्वारा ऐसे अपराधों का सृजन किया है जो कानूनी तौर पर अपराध नहीं है। अपराधों के लिए ऐसी सजाएँ निर्धारित की हैं, जो कानून की किताबों में नहीं हैं और अपराधियों को ऐसी अदालत में पेश होने को कहा है जिन्हें उन अपराधों की जांच करने का कानूनी अधिकार ही नहीं है। घोषणा के प्रश्न पर चार न्यायाधीशों की पीठ ने निर्णय दिया कि राजा घोषणा के द्वारा नये अपराध का सृजन नहीं कर सकता है किसी अपराध के लिए नई सजा निर्धारित नहीं कर सकता है और न ही वह इस तरह के मामले को "स्टार चेम्बर" में भेज सकता है। संसद के बार-बार विरोध के कारण जेम्स प्रथम ने 1611 ई. में प्रथम संसद को भंग कर दिया।

7. दूसरी और तीसरी संसद के कार्य — 1611 ई. के बाद जेम्स प्रथम ने तीन वर्षों तक संसद की बैठक नहीं बुलायी। धन संग्रह के लिए उसने अनेक अवैधानिक साधनों का सहारा लिया फिर भी आर्थिक घाटा पूरा नहीं हो सका। लाचार होकर जेम्स प्रथम को संसद की दूसरी बैठक बुलानी पड़ी। यह संसद भी राजा के अधिकार पर अंकुश लगाना चाहती थी। धन मंजूर करने के पहले यह लगान सम्बन्धी सिद्धान्त को तय करना

Scanned with CamScanner

चाहिती थी अतः जेम्स ने क्रोध में आकर 1614 ई० को एडल्ड संसद (Addled Parliament) अर्थात मूर्ख संसद को भंग कर दिया।

दूसरी संसद के विघटन के बाद जेम्स प्रथम ने सात वर्षों तक निरंकुश शासन किया। धन संग्रह के लिए बल का प्रयोग किया गया। एकाधिकार एवं उपाधियाँ बेची गयी। जनमत की उपेक्षा की गई किसी तरह खर्च चलता रहा किन्तु 30 वर्षीय युद्ध में भाग लेने के लिए जेम्स प्रथम को अधिक धन की आवश्यकता थी। अतः 1621 ई० में तृतीय संसद की बैठक बुलाई गई।

तीसरी संसद की बैठक संवैधानिक दृष्टि से काफी महत्वपूर्ण थी। संसद ने राजा के मंत्रियों एवं अधिकारियों पर नियन्त्रण स्थापित करने की कोशिश की। संसद का सबसे महत्वपूर्ण कार्य एकाधिकार का विरोध था। दो एकाधिकारियों मिशेल एवं मोमपेसन पर महाभियोग चलाया गया। इसके पश्चात लार्ड चान्सलर बेकन पर भ्रष्टाचार का आरोप लगा कर महाभियोग चलाया गया। उसने अपना दोष स्वीकार किया और पद त्याग दिया। इस प्रकार संसद ने राजा के मंत्रियों को पद से हटाने का पुराना अधिकार फिर से प्राप्त कर लिया।

8. विदेशी मामले — संसद ने राजा के विदेश नीति का भी विरोध किया। उस समय यूरोप में तीस वर्षीय युद्ध कैथोलिक और प्रोटेस्टेन्टों के बीच चल रही थी। राजा और संसद दोनों फ्रेडरिक ऑफ प्लेटीनेट की सहायता करना चाहते थे। जेम्स प्रथम इस समस्या का समाधान

स्पेन के दरबार में कुटनीतिक प्रतिनिधित्व द्वारा करना चाहता था। वह अपने पुत्र चार्ल्स की शादी स्पेन की राजकुमारी से करना चाहता था किन्तु संसद स्पेन के विरुद्ध युद्ध छेड़ने के पक्ष में थी और चार्ल्स I की शादी किसी प्रोटेस्टेन्ट राजकुमारी से करवाना चाहती थी। संसद की नीति से जेम्स प्रथम ने असन्तुष्ट होकर कहा कि संसद को विदेश नीति और राजा के निजी मामलों में हस्तक्षेप करने का कोई अधिकार नहीं है। संसद के अनुसार उसे किसी भी विषय पर विवाद करने की स्वतंत्रता है यदि राजा द्वारा यह बात मान ली जाती तो संसद का सारे शासन पर ही नियंत्रण स्थापित हो जाता। राजा ने संसद की कार्यवाही की पुस्तिका से प्रोटेस्टेन्ट वाला पेज फाड़ दिया और तीसरी संसद को भी भंग कर दिया।

चौथी और अन्तिम संसद को बैठक फरवरी 1624 ई० में बुलायी गयी। इस बैठक में राजा के कुछ उच्च पदाधिकारियों को दंड दिया गया। एकाधिपत्य बेचने के अधिकार को संसद ने गैर कानूनी करार दे दिया। स्पेन के विरुद्ध धन की मंजूरी इस शर्त पर दी गयी कि युद्ध के मद में ही धन को खर्च किया जाएगा। इस धन पर नियंत्रण रखने के लिए एक समिति का गठन किया गया था जिसके सदस्य संसद द्वारा चुने जाते थे। इस प्रकार संसद ने खर्च पर नियंत्रण करने की कोशिश की थी।

Scanned with CamScanner

स्पेन के दरबार में कुटनीतिक प्रतिनिधित्व द्वारा करना चाहता था। वह अपने पुत्र चार्ल्स की शादी स्पेन की राजकुमारी से करना चाहता था किन्तु संसद स्पेन के विरुद्ध युद्ध छेड़ने के पक्ष में थी और चार्ल्स I की शादी किसी प्रोटेस्टेन्ट राजकुमारी से करवाना चाहती थी। संसद की नीति से जेम्स प्रथम ने असन्तुष्ट होकर कहा कि संसद को विदेश नीति और राजा के निजी मामलों में हस्तक्षेप करने का कोई अधिकार नहीं है। संसद के अनुसार उसे किसी भी विषय पर विवाद करने की स्वतंत्रता है यदि राजा द्वारा यह बात मान ली जाती तो संसद का सारे शासन पर ही नियंत्रण स्थापित हो जाता। राजा ने संसद की कार्यवाही की पुस्तिका से प्रोटेस्टेन्ट वाला पेज फाड़ दिया और तीसरी संसद को भी भंग कर दिया।

चौथी और अन्तिम संसद को 12 फरवरी 1624 ई में बुलायी गयी। इस बैठक में राजा के कुछ उच्च पदाधिकारियों को दण्ड दिया गया। एकाधिपत्य बेचने के अधिकार को संसद ने गैर कानूनी करार दे दिया। स्पेन के विरुद्ध धन की मंजूरी इस शर्त पर दी गयी कि युद्ध के मद में ही धन को खर्च किया जाएगा। इस धन पर नियंत्रण रखने के लिए एक समिति का गठन किया गया था जिसके सदस्य संसद द्वारा चुने जाते थे। इस प्रकार संसद ने खर्च पर नियंत्रण करने की कोशिश की थी।

Scanned with CamScanner

इस प्रकार, यह देखा जाता है कि जेम्स प्रथम का शासनकाल राजा एवम संसद के बीच झगड़े का एक दीर्घकाल था। एक तरफ राजा अपने पूर्ववत चले आ रहे सम्पूर्ण अधिकारों की रक्षा करने में लगा रहा तो दूसरी तरफ संसद अधिक से अधिक अधिकार प्राप्त करने के लिए प्रयत्नशील रही। अन्तत: जेम्स प्रथम के शासनकाल में संसद ने अनेक अधिकारों को प्राप्त कर लिया। उसने चुनावों पर निर्णय लेने का अधिकार हमेशा के लिए प्राप्त कर लिया। उसने राजा के एकाधिकार का विरोध किया तथा महाभियोग चलाने का अधिकार भी प्राप्त कर लिया। संसद ने राजा के विशेषाधिकारों का भी कड़ा विरोध किया और अपने अधिकारों पर जेम्स प्रथम द्वारा समय-समय पर चलाये गए तानाशाही नीति से भी अपनी रक्षा की।

Scanned with CamScanner

OLIVER CROMWELL - 1635-58

ऑलिवर क्रॉमवेल -

Ques. ऑलिवर क्रॉमवेल की गृहनीति का वर्णन करें।
Describe the domestic Policy of oliver Cromwell.

Or. ऑलिवर क्रॉमवेल के काल में हुए संविधानिक परीक्षण का मूल्यांकन कीजिए।
Evaluate the Constitutional trial in the Period of oliver Cromwell.

Ans. चार्ल्स प्रथम की मृत्यु के बाद इंगलैंड का शासन रम्प संसद (Rump Parliament) के हाथ में आ गया। इस संसद ने लॉर्ड्स सभा को समाप्त कर दिया और इंगलैंड को एक स्वतंत्र कॉमनवेल्थ (Commonwealth) घोषित किया। देश पर शासन करने के लिए 41 सदस्यों की एक कौन्सिल ऑफ स्टेट का गठन किया गया। ब्रेडशा, क्रॉमवेल, फेयरफैक्स आदि इसके प्रमुख सदस्य थे। कुछ ही समय गुजरने के बाद आधारभूत परिवर्तन आया। स्वतंत्र के समर्थक देश में हंगामा (उपद्रव) करने लगे। ऐसी स्थिति में कॉमनवेल्थ की रक्षा के लिए सैनिक अधिकारियों ने इन्स्ट्रूमेन्ट ऑफ गवर्नमेन्ट (Instrument of Government) नामक एक संविधानिक प्रस्ताव तैयार किया। संविधान में एक संरक्षक या प्रोटेक्टर के पद की व्यवस्था की गयी थी, जो कार्यपालिका का प्रधान होता था। Instrument of Government की शर्त के अनुसार ऑलिवर क्रॉमवेल को ~~सन्~~ 1653 ई० में प्रोटेक्टर बनाया गया। उसके काम में कौन्सिल और संसद उसकी मदद करती थी। क्रॉमवेल को किसी अवैधानिक कार्य पर वीटो करने का अधिकार प्राप्त था। संसद में आयरलैंड और स्कॉटलैंड के सदस्य भी थे।

Scanned with CamScanner

क्रॉमवेल की गृहनीति (Domestic Policy)

संसद की प्रथम बैठक - राज्य के प्रशासनिक कामों को ठीक से चलाने के उद्देश्य से क्रॉमवेल ने पहली बैठक बुलायी। संसद द्वारा कानून तथा न्यायपालिका पर काफी लम्बा वाद-विवाद किया गया। संसद सदस्य विधान (Instrument of Government) की कानूनी शक्ति पर ही प्रश्न आरम्भ कर दिया। इसका परिणाम यह हुआ कि क्रॉमवेल का संसद से मतभेद पैदा हो गया। साथ ही 1654-55 ई. में इंगलैण्ड में राजनैतिक अस्थिरता एवं अनिश्चितता की स्थिति उत्पन्न होने लगी। राजतन्त्र के समर्थकों ने सरकार की कर वसूली में भी रुकावट डालने लगे। इन सारी परिस्थितियों का जायजा लेते हुए क्रॉमवेल ने संसद को भंग कर दिया।

2. मेजर जनरल योजना - संसद भंग करने के बाद क्रॉमवेल ने सम्पूर्ण देश को बारह सैन्य जिलों में विभाजित कर दिया। प्रत्येक प्रदेश का उत्तरदायित्व एक मेजर जनरल को सौंप दिया गया। मेजर जनरल को शांति स्थापना के सम्बन्ध में विशेष अधिकार प्रदान किये गये। उदाहरणस्वरूप - मेजर जनरल को स्वेच्छाचारी शासक के रूप में करारोपण का अधिकार था। क्रॉमवेल का यह सैनिक शासन तानाशाही ही था। उस शासन के विषय में मॉरिस एशले (Maurice Ashley) ने कहा था - "कुछ खास चुने हुए लोग अदालतों में ज्यूरी के सदस्य नियुक्त किये गये, समाचार पत्रों का दमन कर दिया गया। अतिरिक्त करों का बोझ डाला गया और नगर महापालिकाओं में रद्दोबदल की गई। स्थानीय मजिस्ट्रेटों को डराया-धमकाया गया, नाच-गानों व दूसरे मनोरंजन के साधनों पर रोक लगा दिया गया। शीघ्र ही लोग इस प्रकार के शासन से ऊब गये और शासन के विरोध में विद्रोह होने लगा।

Scanned with CamScanner

Page No.
Date

सैनिक शासन के विरोध में व्यापारियों ने कर देने से इंकार कर दिया। व्यापारियों द्वारा देश में हिंसाविरोधी लोग कानून व्यवस्था की माँग सभी जगहों से उठने लगी। मजबूर हो कर क्रॉमवेल को दूसरी बैठक बुलानी पड़ी।

3. दूसरी संसद — 1656 ई० में नये संसद के लिए दुबारा निर्वाचन हुआ। क्रॉमवेल को कोशिश की कि निर्वाचन में विद्रोही तत्व सफल न हो सके। इस उद्देश्य से मताधिकार को सीमित किया गया तथा निर्वाचन पर नियंत्रण रखा गया फिर भी क्रॉमवेल को मनोवांछित संसद नहीं मिल सकी। इस संसद द्वारा भी सैनिक शासन की आलोचना की गई। क्रॉमवेल ने बल प्रयोग कर अपने विरोधियों को संसद से निष्कासित कर दिया गया। बाकी सदस्य क्रॉमवेल के समर्थक थे। इन सदस्यों द्वारा एक "विनीत परामर्श एवं प्रार्थना" नामक प्रस्ताव तैयार किया गया जिसमें यह कहा गया था कि वह राजा की पदवी ग्रहण कर लें, कौंसिल ऑफ स्टेट को समाप्त कर दें तथा संसद का एक और सदन मनोनीत कर दे। एलमर के अनुसार, यह एक सैनिक सरकार का अपने आप का नागरीकरण की ओर ले जाने का एक महान प्रयास था।

लेकिन, क्रॉमवेल ने सम्राट का पद ग्रहण करने से इंकार कर दिया क्योंकि सेना में जनतन्त्रवादियों का बहुमत था तथा वे क्रॉमवेल के राजा बनने को भी कभी स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं थे। अतः सैनिकों के इच्छा के विरुद्ध कुछ करने का साहस क्रॉमवेल में नहीं था। परन्तु जीवन-पर्यन्त लॉर्ड प्रोटेक्टर बनना और अपनी मौत से पहले अपने उत्तराधिकारी को मनोनित करना स्वीकार कर लिया। इस प्रकार संविधानिक परीक्षणों में इतिहास में एक नया अध्याय आरम्भ हुआ।

Scanned with CamScanner

जनवरी 1658 ई. में इसकी संसद का दूसरा अधिवेशन आरम्भ हुआ। इस बार संसद के द्वितीय सदन (Other House) में कुछ ऐसे सदस्य निर्वाचित होकर आये थे, जो अधिवेशन आरम्भ होते ही सेना की संख्या, करों का बोझ इत्यादि प्रश्नों को लेकर क्रॉमवेल से झगड़ने लगे जिससे तंग आकर क्रॉमवेल ने Feb 1658 ई. में संसद को भंग कर दिया। इस प्रकार यह संवैधानिक परीक्षण भी असफल रहा।

तत्पश्चात संसद का कोई भी अधिवेशन आमन्त्रित नहीं किया गया। 3 सितम्बर 1658 ई. को क्रॉमवेल की मृत्यु हो गयी।

4. जन कल्याण - सम्बन्धी कार्य — क्रॉमवेल का सबसे अच्छा पहलू यह था कि उसके दिल से जनकल्याण की भावना कभी नहीं गई। देश में शांति-व्यवस्था कायम की, जिससे जनता अपने व्यवसाय-धन्धे शांतिपूर्वक करने लगी। व्यापार में उन्नति होने से सरकार को पहले से तीन-चार गुणा चुंगी ज्यादा मिलने लगा। उसने डाकतार, स्त्रियों के मताधिकार, गुप्त मतदान, विवाह, संसदीय कार्य, न्यायाधीशों के वेतन, बन्दीगृह आदि में सुधार करने की कोशिश की। आधुनिक सिविल सर्विस की स्थापना की गई। शिक्षा और साहित्य के प्रसार हेतु कई शिक्षण संस्थान खोले गये तथा कई लेखकों को आश्रय भी दिया गया। लोगों की सामाजिक दशा सुधारने के लिए समाज में फैली बुराइयों को दूर किया गया। चापलूस भ्रष्ट पादरियों को निकाला गया। प्रत्येक कार्य को ठीक से पूरा करने के लिए कड़े नियम बनाये गये। अनेक कार्य अवैध घोषित किये गये। और कानूनी काम करने वालों को दण्डित किया जाने लगा। लोगों में अनुशासन और कानून का भय पैदा किया गया।

5. **धार्मिक नीति** — क्रॉमवेल धार्मिक मामलों में सहनशील था। उसके शासन काल में सर्वाधिक धार्मिक स्वतंत्रता थी। उस समय प्यूरिटन नियमों के अनुसार, राजकीय कार्य की व्यवस्था होती थी। उसकी धार्मिक नीति सहिष्णुता पर आधारित थी। फिर भी क्रॉमवेल ने कभी भी रोमन कैथोलिक धर्म के अनुयायियों को प्रताड़ित या धार्मिक आघात नहीं पहुँचाया न ही कभी अन्य एंग्लिकन धर्म के लोगों के साथ ऐसा व्यवहार किया। पादरियों के नैतिक जीवन में भी सुधार लाया गया। भ्रष्ट पादरियों के स्थान पर चरित्रवान पादरियों की नियुक्ति की गई। उसने धार्मिक आधार पर किसी भी सम्प्रदाय को उत्पीड़ित नहीं किया।

इस प्रकार यह देखा जाता है कि क्रॉमवेल अपनी सरकार को संवैधानिक आधार देने में असफल रहा। उसकी सरकार जनता के बीच लोकप्रियता प्राप्त नहीं कर सकी। यह बात सही है कि एक रक्षा सिपाही भी अपनी सैनिक सफलताओं से प्रसिद्धि की पराकाष्ठा तक पहुँचा था उससे यह उम्मीद करना अत्यन्त कठिन है कि वह एक संवैधानिक शासक बन पायेगा। उसकी समस्या यह थी कि वह न तो संसद के बिना शासन कर सकता था और नहीं न ही संसद के साथ।